फसल प्रबंधन

छह से आठ महीने में फसल तैयार हो जाती है। पूरे पौधे को उखाड़कर, उसकी जड़ो से मिट्टी को अच्छी तरह साफ कर सुखाना चाहिये। इसके बीज बहुत छोटे आकार के होते हैं, इस कारण इनका संग्रह मुश्किल है। इसलिए कटाई के समय कपड़े का एक टुकड़ा पौधे के नीचे रखा जाना चाहिए ताकि बीज उसमें एकत्र हो सके। बीजो को सुखाने के पश्चात् छोटे जूट के थैलों में संग्रहित किया जाता हैं, जिन्हें अगले मौसम के लिए जर्मप्लाज्म के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

उत्पादन

दो वर्षों में इसकी खेती से लगभग 3.75 टन/हेक्टर सूखी उपज अनुमानित है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क: 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्स: 0761–2661304

ई–मेल: rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब: http://www.rcfccentral.org

चिरायता

Swertia chirata (Roxb. Ex Flem)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019

चिरायता

Swertia chirata (Roxb. Ex Flem)

आयुर्वेदिक नाम	किराता, तिक्ता
हिन्दी नाम	चिरायता
यूनानी नाम	चिराता
व्यापारिक नाम	चिरायता
वैज्ञानिक नाम	*Swertia chirata*
उपयोगी भाग	संपूर्ण पादप

चिकित्सीय उपयोग

चिरायता एक कड़वा टॉनिक है जो कि कृमिनाशक, रेचक तथा ज्वरनाशक, होता है। इसका उपयोग बवासीर, त्वचा रोग, अल्सर और मधुमेह के उपचार में किया जाता है।

आकारिकीय लक्षण

चिरायता एक वार्षिक, शाकीय, सीधा पौधा है, जो कि 1.5 मी. ऊँचाई का होता है। तना मजबूत और नीचे बेलनाकार, लेकिन ऊपर की ओर चतुष्कोशीय होता है। पत्तियाँ चौड़ी, भालाकार, 10 सेण्टीमीटर तक लंबी, 3 से 4 सेण्टीमीटर चौड़ी, अग्रभाग पर नुकीली होती हैं। फूल हरे–पीले रंग के, बीच–बीच में बैंगनी रंग से चित्रित, अनेक शाखा युक्त पुष्पदण्डों पर लगते हैं। पुष्प में बाहरी व आभ्यन्तर कोष 4–4 खण्ड वाले होते हैं, तथा प्रत्येक पर दो–दो ग्रंथियाँ होती हैं। फल लंबे, गोल, छोटे–छोटे एक चौथाई इंच के अण्डाकार होते हैं तथा बीज बहुसंख्य, छोटे, बहुकोणीय एवं चिकने होते हैं। वर्षा ऋतु में फूल आते हैं। फल जब वर्षा के अंत तक पक जाते हैं तथा तब शरद ऋतु में इनका संग्रह करते हैं।

वितरण

यह पादप शीतोष्ण जलवायु में पाया जाता है। नेपाल इसका मूल उत्पादक देश है। कहीं–कहीं मध्य भारत के पहाड़ी इलाकों व दक्षिण भारत के पहाड़ों पर उगाने के प्रयास किए गए हैं।

जलवायु और मिट्टी

इस पादप का मुख्य पर्यावास शीतोष्ण जलवायु है। इसकी खेती के लिए चिकनी बलुई, भुरभुरी, मिट्टी उपयुक्त है। यह प्रजाति 100 से.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों मे भी आसानी से ऊगाई जा सकती है।

प्रचार सामग्री (Propagation Material)

इस प्रजाति को बीज के माध्यम से सफलतापूर्वक प्रवर्धित किया जा सकता है। परिपक्व बीजों का संग्रहण पतझड़ के मौसम मे किया जाता है।

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक

चिरायता के बीज नर्सरी की स्थिति में अच्छी तरह से उग जाते हैं। बीजों को 10 से 15 सेमी की पंक्तियों में और 0.5 सेमी गहराई में बोया जाता है। पूर्ण अंकुरण के लिए लगभग 25–28 दिन लगते हैं। अक्टूबर–नवंबर में बुवाई किये गये बीजों का अंकुरण अधिक होता है जबकि मार्च–अप्रैल में बोए गए बीजो का अंकुरण बहुत कम होता है। अक्टूबर–नवंबर में बुवाई की जाती है। एक हेक्टेयर के लिये लगभग 200 ग्राम बीजो की आवश्यकता होती है।

खेत में रोपाई

भूमि की तैयारी

खेत को सर्वप्रथम जुताई कर खरपतवार की साफ–सफाई करना चाहिये। ज्यादा उपज के लिये मिट्टी में वर्मीकम्पोस्ट @3.75 टन/हेक्टेयर और वन पत्ती कूड़े की खाद @ 2 टन/हेक्टेयर खेत मे डालना चाहिये। निदाई एक महीने में एक बार मैन्युअल रूप से करना चाहिये। बारिश के दौरान, पौधे को गलन से बचाने के लिए, खेतों के चारों ओर नाली खोदकर एक उचित जल निकासी प्रणाली सुनिश्चित की जानी चाहिए।

रोपाई

ठंडे प्रदेशो मे मार्च–अप्रेल एवं अन्य प्रदेशो मे जून–जुलाई मे पौधो की रोपाई करना चाहिये। पौधे से पौधे की दूरी 45–45 से.मी. रखी जानी चाहिये, जिसके लिये 50000 पौधौ की आवश्यकता होती है।